संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ३४ ● १६ सितम्बर २०१७ भाद्रपद कृष्ण पक्ष चर्तुदशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

सहारनपुर में जिला आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ एवं शराब बन्दी आन्दोलन को प्रदेश में प्रभावी करेगा आर्य समाज

– डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

सहारनपुर– ६ सितम्बर जिला आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं तथा शराब बन्दी आन्दोलन तब तक चलता रहेगा जब तक पूर्ण शराब बन्दी प्रदेश में सरकार लागू नहीं करेगी। क्योंकि इससे प्रत्येक परिवार में जहाँ एक भी शराब पीने वाला है अशान्ति रहेगी विवाद होगा– अर्थाभाव से बच्चों का भविष्य अन्धकार युक्त हो जायेगा। साथ ही सम्मान भी समाप्त होता है कि इस प्रदेश में शराब ही लड़ाई की जड़ है जेल में चोरी–व्यभिचार करने वाले सभी शराबी हैं आर्य समाज इसका सदैव विरोध करेगा और सरकार से आन्दोलन के माध्यम से बन्द कराने का प्रयास करेगा और सरकार से आन्दोलन के माध्यम से बन्द कराने क प्रयास करना रहेगा। उसके साथ ही प्रधान जी ने बताया महर्षि जी का जो सपना था कि जब तक बालक/बालिकाओं को प्राचीन गुरूकुल शिक्षा पद्धति की शिक्षा नहीं दी जायेगी तब तक संस्कृत भाषा–संस्कृति और संस्कारों की रक्षा नहीं हो सकेगी। चरित्र निर्माण बिना संस्कारों के असम्भव है अतः आर्य समाज ने गुरूकुल खोलकर विश्व को एक उपहार दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत बैठक में प्रस्ताव पास किया है कि आर्य विद्वान्–सन्यासी तथा भजनोपदेशक जो वृद्धावस्था में असहाय हो जाते हैं परिवार में सेवा नहीं होती उनकी सेवा के लिए सभा पेंशन योजना प्रारम्भ करेगी उसके लिए "आर्य विद्वत्वसम्मान सहायता निधि" का निश्चय किया है उसके लिए आप सभी स्वयं तथा अन्यों से सहयोग करें और न्यूनतम २ करोड़ रूपये की स्थाई निधि रूपये की स्थाई निधि बनाने में योगदान करें। प्रधान जी के पश्चात् सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी प्रधान जी का समर्थन करते हुए शुद्धि संस्कार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी के योगदान को याद दिलाया तथा वर्तमान समय में उसका अनुकूल वातावरण बनाने पर जोर दिया।

२. सर्वप्रथम ध्वजारोहण आचार्य स्वदेश आर्य अधिष्ठाता गुरूकुल वृंदावन ने किया और ध्वजगान के पश्चात् विशाल शोभायात्रा नगर के गाँधी पार्क मैदान से प्रातः ११ बजे आरम्भ हुई तथा घण्टाघर, नेहरू मार्किट, शहीदगंज, खालापार, नवाब गंज होते हुए लगभग २ बजे मुख्य कार्यक्रम स्थल उत्सव पैलेस पर पहुँची। इस शोभायात्रा का भव्य स्वागत नगर में कई स्थानों पर विभिन्न धर्म के अनुयाइयों, सामाजिक संगठनों द्वारा किया गया। शोभायात्रा का भव्य स्वागत नगर में कई स्थानों पर विभिन्न धर्म के अनुयाइयों, सामाजिक संगठनों द्वारा किया गया। शोभायात्रा का संचालन सर्वश्री आचार्य प्रियव्रत शास्त्री, मा० कोमल सिंह, डॉ० देवी सिंह आर्य, डॉ० भूपचन्द आर्य, विनोद आर्य, शिवकुमार शास्त्री, निर्मला आर्य, सुभाष रोहिला, शैली आर्या आदि के कुशल नेतृत्व में किया गया। शोभायात्रा में विभिन्न प्रान्तों–दिल्ली, चण्डीगढ़, हरियाणा, उत्तराखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के कई जनपदों– शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ सहित सहारनपुर जनपद के हजारों आर्यजन सम्मिलित हुए।

शोभायात्रा के मुख्य अतिथि प्रदेश सभा के प्रधान डॉ० धीरज सिंह रहे। शौभायात्रा पूर्णतः सोहार्दपूर्ण वातावरण में अनुशासित होकर नगर से निकली तो नगरवासी यह देख कर आश्चर्यचकित रहे कि पुलिस व प्रशासन के सहयोग की भी आर्यों की इस सेना के लिए आवश्यकता नहीं पड़ी आर्य समाज के स्वयं सेवकों व आर्य वीरों ने समस्त आर्यों ने व्यवस्था बड़ी शालीनता एवं अनुशासन से सम्भाल रखी थी, लगभग ५ हजार आर्य जनों को यह जनसमूह बिना किसी बाधा व किसी को परेशान किए शान्तिपूर्ण ढंग से ऋषि देव दयानन्द के अनुशासित व सभ्य सिपाही होने का परिचय दे रहा था। सहारनपुर का पुलिस प्रशासन भी आर्य जनों की इस व्यवस्था की प्रशंसा किए बिना ना रह सका।

२. द्वितीय सत्र के वक्ता आचार्य स्वामी श्रृद्धानन्द ने अपने सम्बोधन में "राष्ट्र रक्षा" विषय पर बोलते हुए राष्ट्र की उन्नति के लिए सतत् प्रयास करने तथा हिन्दु समाज के विभिन्न मतों में बंटा होन पर अफसोस जाहिर किया और वैदिक धर्म के अनुसार चलकर देश की रक्षा में सहयोगी बनने का सन्देश दिया।

१० सितम्बर को कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन से हुआ और इसके उपरान्त "यज्ञों में एकरूपता" विषय पर व्यापक चर्चा हुई। कार्यक्रम में देश के कोने– कोने से आये विभिन्न भजनोपदेशकों ने अपनी मधुर वाणी से ऋषि दयानन्द तथा वेद का गुणगान किया इसी कड़ी में जिला सभा के प्रधान आचार्य विरेन्द्र शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के पुरोहितों के हवन करने में एक रूपता होनी चाहिए जो केवल महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित संस्कारविधि के अनुसार ही सर्वथा सर्वमान्य होनी चाहिए इसके लिए एक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर भी लगाने का उन्होंने प्रस्ताव रखा जिसमें पुरोहितों को प्रशिक्षत करके विधि अनुसार यज्ञ–कार्य कराना सिखाया जायेगा। इसके अतिरिक्त सांसद राघवलखनपाल शर्मा, पूर्व विधायक राजीव गुम्बर तथा रामपुर विधायक श्री देवन्द्र सिंह सहित अनेकों प्रतिनिधियों व सामजसेवियों ने अपने विचार रखे।

दूसरे दिन द्वितीय सत्र में "महिला सम्मेलन" में बोलते हुए डी. ए.वी. की प्राचार्या सुश्री मीनू भट्टाचार्जी ने कहा कि महिलाओं को स्वतंत्रता के साथ–साथ अपनी मर्यादाओं में रखते हुए पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना चाहिए और पाखण्ड और कुरीतियों से अपने परिवार व बच्चों को दूर रखना चाहिए उन्होंने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा, कि वे किसी भी मायने में पुरूषों से कम नहीं है।

अन्तिम सत्र " कार्यकर्ता सम्मेलन एवं सम्मान समारोह' में जिला महामंत्री अवनीश आर्य ने कार्यकर्ताओं को संगठित होकर कार्य करने और अपने परिवारों को आर्य समाज से जोड़ने का आवाहन किया। सभा के अन्तिम कार्यक्रम के रूप में सक्रिय कार्यकताओं, समाजसेवियों, भजनोपदेशकों, उपदेशकों व पुरोहितों को स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित व्यक्तियों ने जिला सभा द्वारा आयोजित इस सम्मान को सराहनीय एवं प्रशंसनीय बताते हुए जिला सभा का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के संयोजक देवेन्द्र आर्य ने समस्त कार्यकर्ताओं का तन–मन–धन से सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट किया तथा शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–अवनीश आर्य मन्त्री

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

खोदत खोदत चूहा मर गया....?

आर्य समाज के भजनोपदेशक म० परम सिंह आर्य गुरूकुल पूठ के वार्षिक सम्मेलन पर आये उन्होंने पुराने समय के भजन सुनाकर आर्य जनता को प्रभावित किया सन्त गंगादास जी कविरत्न एवं म० तेज सिंह दादा वस्तीराम पृथ्वी सिंह बेधड़क, जी जो सहदेव बेधड़क जी के दादा जी होते थें जनता बड़े ध्यान से सुनती रही लेकिन जब यह भजन सुनाया तो लोगों ने कहा महाशय जी १ बार फिर सुनाओ उन्होंने फिर सुनाया लोगों ने लिखा याद कर लिया फिर सभी गुनगुनाते कई दिनों तक लोगों ने देखा फिर भूल गए आज की समाजिक समस्या को देखकर जब मैं मा० गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी का बयान सुन रहा था तब मुझे वह दृश्य और ये पंक्तियां पुनः याद हो आई आपको साझा करने के लिए और अनुभव के लिए लिख रहा हूँ–

खोदत–खोदत चूहा मर गया मौज करी भुजङ्गे ने।
जोड़त–जोड़त कृपण मर गया मौज करी गरतङ्गे ने।
दौड़त–दौड़त दुनियाँ मर गई मौज करी सत्संगे ने।।
सीचत–सीचत माली मर गया, मौज़ ली भौरगें ने।।

इन पंक्तियों में प्रथम पंक्ति हमारे देश के नेताओं के लिए विशेष रूप से स्मरणीय है। १९४७ की गलती आज तक ठीक नहीं हो पाई है। २ करोड़ ७० लाख से आज २५ करोड़ होकर पृथक् प्रदेश की मांग करने की योजना बना रहे हैं। विभाजन के बाद भी शान्ति समझौता नही प्रतिदिन युद्ध विभीषिका खड़ी रहती है सीमा पर हमारे युवा वीरों के बलिदान होते रहते हैं यह सभी भारतीयों के लिए चिन्तनीय है। कोई पार्टी यदि इसका समर्थन करे कि इन रोहिंग्या मुसलमानों को नागरिकता दी जाये ऐसी पार्टी को देश द्रोही पार्टी घोषित किया जाये उनके लिए स्थान, आवास, भोजन व्यवस्था नागरिकता फिर प्रदर्शन, धरने फिर आरक्षण नौकरी, मकान पता नहीं क्या–क्या सुविधाओं की अपेक्षा रहेगी।

इन समस्याओं को देखते हुए भारत सरकार पूरी कठोरता से निर्णय ले और मा० गृहमन्त्री जी के निर्णय का देश की जनता स्वागत और समर्थन करे। क्योंकि इनका पुराना रिकार्ड कहता है कि देशभक्त नहीं हो सकते। ये चोरी करना, लूटकरना, हत्या करना इनका मुख्य व्यवसाय रहा है अतः जिस देश में पैदा हुए हैं जब वहाँ ही आतंकवादी बन गए दूसरे देश से इन्हें कौन सी आत्मीयता रहेगी। हमारे पूर्वजों की धरोहर भूमि–संस्कार– वातावरण–संस्कृति और सभ्यता सभी पर एक साथ आक्रमण होगा आप चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पायेंगे। पुराने बुजुर्गों पूर्वजों की शिक्षा जो कहावत के रूप में है कि "अजमाये हुए को पुनः अजमाना महामूर्खता का लक्षण है। पत्र– पत्रिकाओं में चर्चा का विषय है कि ४० हजार रोहिंग्या मुसलमान शरणार्थी के रूप में वर्मा देश से यहाँ आ गए हैं यहाँ कांग्रेस चाहती है उन्हें पूरा संरक्षण मिले और उन्हें बसाकर नागरिकता दी जाये।

यह रोहिंग्या समुदाय १२वीं सदी के प्रारम्भ में रखाइन इलाके में आकर बस गया लेकिन आज तक बौद्ध भिक्षुओं ने उनको नागरिता प्रदान नहीं की २०१२ में इन्होंने आक्रमक रूप धारण कर लिया और सुरक्षा कर्मियों की हत्या कर दी तब से भड़की हिंसा अभी रूक नहीं रही अपितु उग्र होती जा रही है वर्मा (म्यांमार) में बौद्धभिक्षु पीड़ित है चूहों ने जो मेहनत की साँप ने आकर घर पर कब्जा कर लिया। अभी गतमास २५ अगस्त को भी ऐसी ही घटना से वातावरण उग्र हो गया है। अब सरकार सैनिकों द्वारा वर्मा की सीमा से उन्हें बाहर खदेड़ रही है अब भारत सीमा में प्रवेश कर शरणार्थी बन रहे हैं पहले ४० हजार अब आने वालों की संख्या कितनी भी बढ़ सकती है जो खतरे की घण्टी है और देश के लिए घातक है जो वहाँ आतंक हिंसा कर रहे हैं वे यहाँ क्या चुप बैठे रहेगें अतः दूध का जला छाछ को भी फूँक मारकर पीता है इसी कहावत के आधार पर भारत सरकार से कहना चाहूँगा कि सावधानी से निर्णय लेवें। भारत माता को आप पर बड़ी आशायें हैं ये और विषैले साँप हम चूहों की मेहनत को बेकार न जाने दें, यह मोहम्मद गौरी की क्षमायाचना जैसा ही रूप होगा जो उस समय पृथ्वीराज चौहान को भुगतना पड़ा था, तब से लेकर आज तक वह परम्परा जारी है हमें इससे शिक्षा लेनी है जिसकी रक्षा के लिए महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी बन्दा बैरागी जैसे हजारों बलिदान प्रेरणा देते हैं कि हमारी भारत माता की रक्षा का व्रत लेकर आपको सजग रहना है किसी भी आतंकवादी को प्रश्रय नहीं देना है इसे तो विश्व गुरू के स्थान पर प्रतिष्ठत करना है। तभी पूर्वजों की तपस्या सार्थक होगी उनकी मेहनत की रक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है अन्यथा वही उक्ति सार्थक होगी –

खोदत–खोदत चूहा मर गया मौज करी भुजङ्गे ने...

- सम्पादक

शोक संवेदना

1. आर्य समाज मुकीम पुर–पिलखुवा– हापुड़ के प्रधान श्री शमशेर सिंह आर्य का निधन हो गया वे लगभग ८० वर्ष के थे। ग्राम में गुरूकुल का संचालन कर रहे थे जिला सभा के भी अन्तरंग सदस्य थे। सभामन्त्री जी ने शोक संवेदना घर पर जाकर प्रदान की ओर परिवार को धैर्य प्रदान कराया।

2. आर्य समाज जुनपत –ग्रेटर नोएड़ा के प्रधान एवं जिला सभा के पूर्व प्रधान सरपंच रामेश्वर आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती शारदा देवी जी का देहावसान हो गया ३ सितम्बर को उनका अन्तिम संस्कार क्षेत्रीय आर्यों ने वैदिकरीति से किया, सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में पहुँचकर सभा की ओर से शोक संवेदना, व्यक्त की। विक्रम सिंह शास्त्री जी ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया। सलेक आर्य, धनन्जय आर्य, जनार्दन आर्य तीनों सुपुत्र समाजसेवी है माता जी धार्मिक एवं सेवा भावी माता थीं जिला सभा गौतम बुद्ध नगर एवं गाजियाबाद के सभी आर्य यज्ञ में उपस्थित रहे।

3. आर्य समाज बनभौरा–बुगरासी–बुलन्द शहर के प्रधान नकुल सिंह शास्त्री की पुत्रवधू का प्रसव काल में निधन हो गया सर्वत्र शोक छा गया। आर्य मित्र परिवार एवं स्वामी जी ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।

4. आर्य समाज बनभौरा–बुगरासी–बु0शहर– के उपप्रधान यशवीर सिंह आर्य के दामाद का एक दुर्घटना में अचानक स्वर्गवास हो गया क्षेत्र में शोक व्याप्त हो गया। क्षेत्री आर्यों ने तथा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने परिवार में जाकर धैर्य प्रदान किया एवं शोक संवेदना व्यक्त की।

5. गुरूकुल पूठ के प्राचार्य राजीव जी की मामी श्रीमती संज्ञा देवी आर्या धर्मपत्नी रामपाल सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज कॉठ मुरादाबाद का अचानक देहान्त हो गया वे ६५ वर्ष की थीं उनका शान्ति यज्ञ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने सम्पन्न किया। विदुला विदुषी दो पुत्रियां हैं एवं भाई विश्वबन्धु आर्य एक मात्र पुत्र है। नामकरण से ही पता चलता है कि पूर्ण आर्य परिवार है। आर्य मित्र परिवार एवं स्वामी जी सभा मन्त्री परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हैं।

6. आर्य समाज मण्डी बॉस मुरादाबाद के मुख्य स्तम्भ आर्यजगत् के विद्वान् श्री वीरेन्द्र जी आर्य का देहावसान हो गया वे लगभग ८५ वर्ष के थे उन्होंने बहुत पुस्तकें लिखी हैं तथा प्रकाशित की हैं मुरादाबाद जिले में वे सम्मानित आर्य विद्वान थे उनके निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। आर्य मित्र परिवार उनके परिवार के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता है।

7. आर्य समाज सर्फाबाद–नोएड़ा के संस्थापक म० तेजपाल सिंह आर्य ६५ वर्ष की आयु में दिवंगत हो गए वे स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य समाज के ग्रामीण उपदेशक रहे हैं स्वामी भीष्म जी के सम्पर्क से आपके जीवन में कुछ देश सेवा की भावना जगी जो निरन्तर बढ़ती रही। आपके ४ पुत्र ३ पुत्रियाँ हुईं जिसमें श्याम सिंह, म० राम सिंह आर्य, श्री डी०पी० यादव पूर्व मन्त्री उ०प्र० सरकार एवं राज्य सभा सांसद, श्री धर्म वीर सिंह ३ सितम्बर को अपनी शोक सभा प्रेरणा सभा के रूप में विशाल स्तर पर हुई जिसमें स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सभा मन्त्री स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्नामन्त्री उ०प्र०, स्वामी विश्वानन्द जी स्वामी अखिलानन्द जी, स्वामी साक्षी जी सांसद, आचार्य संजवीव रूप, आचार्य प्रणव जी, आचार्य यशवर्द्धन, श्री माया प्रकाश त्यागी कोषा०, पंजाब सरकार के वि० सभा अध्यक्ष एवं विधायक डॉ० महेश शर्मा केन्द्रीय मन्त्री के अलवा हजारों लोग उपस्थित रहे। बाद में श्री डी०पी०यादव जी एवं राजेन्द्र आर्य ने सभी आई जनता का आभार व्यक्त किया पुस्तक का विमाचन हुआ आर्यमित्र परिवार की ओर से परिवार को शोक संवेदना व्यक्त की जाती है।

धरोहर

राष्ट्रीय स्वाधीनता से उदगाता देव दयानन्द के सच्चे अनुयायी – एक वन्दनीय मनीषी– मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

- डॉ० वेदानन्द आर्य

(टिप्पणी- यह लेख स्वामी जी के जीवन काल में उनके अभिनन्दन ग्रन्थ हेतु लिखा था अतः कहीं वर्तमान सा लग रहा था उसे भूतकाल कर दिया है। लेखक कई ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं। वर्तमान में आर्यसमाज जिला- हापुड़ गाजियाबाद का इतिहास लिख रहे है)

उन्नीसवीं शदी के मान उन्नयाक तथा युग पुरूष देव दयानन्द ने शिरोमणि देश भारत को विदेशियों द्वारा पददलित, दुर्दशा ग्रस्त होते देखकर ही तो स्वराज्य स्वधर्म एवं स्वभाषा का नारा लगया था। यथार्थ में स्वामी जी क्रान्ति के अग्रदूत बनकर ही कर्म भूमि में अवतरित हुये थे। इतिहास में इस बात के भी प्रर्याप्त प्रमाण हैं कि भारत के क्रान्तिकारियों को स्वामी जी से सानिध्य रहा था। स्वामी जी भारत के पतन तथा पराधीनता के कारणों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर आये थे कि अत्यधिक निर्धनता से सामाजिक हीनता तथा अपनी संस्कृति, साहित्य न परम्पराओं के प्रति हीन भावना एवं आत्म गौरव से रहित होकर राष्ट्रीयता का स्वप्न कदाचित भी सम्भव नहीं है। उन्होंने अनुभव किया था कि स्वभाषा, स्वसंस्कृति व स्वधर्म को आधार बनाकर ही राष्ट्रीय कल्याण के इसी दृष्टिकोण को समक्ष रख कर स्वामी जी ने स्वभाषा, स्वधर्म, व स्वसंस्कृति के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया था। जिसके लिये उन्होंने सर्व प्रथम भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लक्ष्य से संस्कृत की पाठशालाएं खोलनी प्रारम्भ की थी। जिन्होंने स्वामी जी के पश्चात् गुरूकुलों का रूप ले लिया था। क्योंकि संस्कृत में भारतीय दर्शन तथा ज्ञान–विज्ञान का अपरिमित ज्ञान विद्यमान है स्वामी जी को आभास हो चुका था कि देश के प्राचीन गौरव से शून्य सामाजिकों द्वारा व राष्ट्रीय चेतना का जाग्रत करना सर्वथा असम्भव ही है। ऐसे में चिरनिद्रा में सोये राष्ट्र के स्वाभिमान व अस्मिता को जाग्रत करना नितांत आवश्यक था। इसलिये स्वामी जी के भाव स्पष्ट नज़र आते थे। महर्षि की कार्यशैली तथा उनके दृष्टिकोण से प्रेरणा लेकर सैकड़ों नर–नारियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की एक तड़प सी उत्पन्न होकर नव चेतना की भावनाएं प्रादुर्भूत होने लगी थी। स्वामी जी जिस मार्मिक ढंग से अपनी मान्यताओं का प्रतिपादन करते थे उससे उनके विचार सुनने वाले प्रत्येक नर–नारी के मन में स्वमेव ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होने लगते थे।

नवचेतना की उत्पन्न इस लहर से उतप्रेरित अनेक लोग अपना जीवन राष्ट्रहित को समर्पित कर ऐ महान साधना पथ पर चलने को संकल्पित हुये थे। विस्तृत रूप से इसकी चर्चा यहां ना तो सम्भव ही है और न उचित है। लेकिन इतना अवश्य है कि सैकड़ों नर–नारी राष्ट्रीयता की इस भावना से अनुप्रणित होकर विदेशी शासन के अन्त को क्रान्तिकारी दलों में शामिल हो गये थे और कतिपय अंग्रेजों के विरुद्ध चलाये जा रहे आन्दोलनों में सक्रिय हो गये थे। मगर कतिपय लोग शिक्षा साहित्य के क्षेत्र में अवतरित होकर वैचारिक क्रांति को तत्पर हुये थे। श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती भी इसी श्रृखला की एक कड़ी के अन्तर्गत आते हैं। वह भी इस राष्ट्र यज्ञ को सम्पन्न कराने के लक्ष्य से ही अपने जीवन की सर्वं वैः पूर्ण'' स्वाह की आहुति को उद्यत हुये थे। यहां ध्यातव्य है कि ब्रिटिश शासकों की वह नीति जिसके अन्तर्गत उन्होंने देश के शिक्षणालयों में अंग्रेजी को प्रमुख स्थान देकर हमारी शिक्षा प्रणाली को दूषित करने का कुत्सित कार्य किया था। स्वामी जी ने अंग्रेजों की इसी नीति के विरूद्ध आवाज उठाकर इसके विपरीत हिन्दी को ही राजभाषा बनाने की मांग की थी। जिसके लिए अंग्रेजों के उच्चाधिकारियों के पास स्मृति पत्र भी पहुंचवाये थे। इसके लिए स्वामी जी अपने देश की भाषा में ही अपनी संस्कृति व धर्म का ज्ञान निहित मानते थे। इन्हीं भावनाओं व उद्देश्यों से अभिभूत होकर श्री मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती ने भी इस क्षेत्र में पदार्पण किया था।

पूज्य स्वामी जी मूलरूप में पंजाब के निवासी थे। देश विभाजन की विषम परिस्थितियों में वह हरयाणा के सिरसा जनपद में जाकर विस्थापित हो गये थे। तत्पश्चात् उज्जैन आदि शिक्षा केन्द्रों पर संस्कृत का गहन अध्ययन कर सन् १६५१ में वह हापुड़ आर्य समाज में आ गये थे। १०–१२ वर्ष तक आत्म मंथन के उपरान्त तथा परिवैष्ठनीय शक्ति से प्रभावित होकर सन् १६५३ में उन्होंने ततारपुर में गुरूकुल की स्थापना की थी। स्वामी जी ने वैचारिक दृष्टि से ततारपुर को ही अधिक उर्ववरक व उपयुक्त माना था। आर्य समाज के गुरूकुलों, महाविद्यालयों व डी०ए०वी० संस्थाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन को लेकर बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। शिक्षा जगत में व्यापक रूप से इन संस्थाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है। राष्ट्रहित से लेकर जन मानस की चेतना को जाग्रत करने में भी इन संस्थाओं की चमत्कारिक भूमिका रही है। आर्य समाज की इन संस्थाओं ने देश को कितने उत्कृष्ट लेखक, साहित्कार, इतिहासकार, मननशील, पत्रकार, मनीषी व राजनैतिक प्रदान किये हैं यह लिखने की आवश्यकता नहीं है। जिन्होंने देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी देश के गौरव में वृद्धि **सम्पादक - स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** का श्रेय प्राप्त किया है। जिनकी विद्वता व तार्किक शक्ति का विदेशी तक लोहा मानते हैं। गुरूकुल ततारपुर के ही अनेक स्नातक कालिजों व डिग्री कालिजों में सेवारत हैं जो अपने धर्म व संस्कृति का स्तम्भ माने जोते हैं। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती जो गुरूकुल ततारपुर की ही देन हैं जो आज गुरूकुल ततारपुर के साथ गुरूकुल पूठ का कुशलता पूर्वक संचालन कर प्रदेश भर में आर्यवीर दल को शाखाएं लगवाकर राष्ट्र को सजग प्रहरी प्रदान करने के महान् कार्य में जुटे हैं, हम उनका शतशः धन्यवाद करते हैं।

स्वामी जी गम्भीर प्रकृति के सन्यासी थे। वह बहुत ही निष्ठा के साथ बोलते तथा व्यवहार करते थे उनकी वाणी से पांडित्य व आत्मीयता के भाव प्रकट होते थे। स्वामी जी गुरूकुल के व्यस्त जीवन में भी निकट की आर्य समाजों व अपने निष्ठावान सहयोगियों से मिलने का समय निकाल लेते थे। ऐसे में वह पारिवारिक यज्ञों के साथ–साथ अनुरोध पर संस्कार आदि कराने का भी अवसर प्रदान करते थे। मुझे ध्यान है कि एक बार स्वामी जी अन्न संग्रह के लिए औरंगाबाद आये थे, संयोग से उसी दिन हमारे ही परिवार में लड़की की शादी थी। परिवार के सभी सदस्यों के अनुरोध पर पर स्वामी जी ने जिस आकर्षक विधि से सारगर्भित व्याख्या करके संस्कार कराया था वह देखते ही बनता था। एक बार की एक घटना मेरी स्मृति पटल पर है। माता का मेला था। महिलाएं व बच्चों की संख्या अधिक थी, कुछ ही चलने के पश्चात ऐसा प्रतीत हुआ कि एक महिला स्वामी जी के चरण स्पर्श की क्रियाशील हुई, तो स्वामी जी तीव्रता के साथ उछलकर दूर हो गये। वह महिला तो 'आवक' रह ही गयी मैं भी दंग रह गया मैंने मन ही मन कहा कि धन्य! है! तुम्हें हे! देवदयानन्द तुम आज भी सन्यासियों व ब्रह्मचारियों के प्रेरणा स्रोत बने हो! स्वामी जी मातृशक्ति का बहुत सम्मान करते थे। अन्त में हम इस मनीषी को वन्दना करते हुये इतना अवश्य कहेंगे कि आपने ततारपुर में गुरूकुल की स्थापना कर इस क्षेत्र की जनता पर जो महती अनुकम्पा की है वह सदैव के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। मैं स्वामी जी की कर्मठता–सरलता और सच्ची साधुता के प्रति नतमस्तक होकर हजारों युवाओं के प्रेरणा पुञ्ज पूज्य स्वामी जी को सादर श्रद्धांञ्जली प्रदान करता हूँ।

वेद में निराशा को स्थान नहीं

– डॉ० अशोक आर्य

आज विश्व के प्राणी भौतिकता पर आश्रित होने के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं से घिर रहे हैं। कोई धन के लिए दुःखी है तो कोई धन होने के कारण दुःखी है। आज हमारी समस्याओं से भी अनेक प्रकार की समस्याएँ निकल रही हैं। प्राचीन वैदिक युग में इस प्रकार की निराशा नहीं थी। सब लोग प्रसन्न थे। सब की इच्छाएं उन की आवश्यकताओं के अनुसार पूर्ण होती थीं। सपन्न लोग अपनी आवश्यकता से अधिक होने से अतिरिक्त धन निर्धनों की सहायता में बाँट देते थे। वह गरीबों की सहायता के लिए कुंए खुदवाते थे, औषधालय खोलते थे। यात्रियों के विश्राम तथा रुकरने के लिए धर्मशालाए खोलते थे। इन कारणों से न तो धनवान को अपने अतिरिक्त धन को संभालने की आवश्कता होती थी और न ही निर्धन व्यक्ति को भी।

कभी किसी के सामने हाथ फैलाने होते थे। इस कारण सब और सुख ही सुख था, सब लोग प्रसन्न ही प्रसन्न थे। आज हम देखते हैं कि सब ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती है, सब और दुःख ही दुःख दिखाई देता है, सब और चिंता ही चिन्ता देखने को मिल रही है। सब लोग त्रस्त हैं। यहाँ तक कि अमरीका जैसे विश्व के सबसे सम्पन्न देश में भी अप्रसन्नता, निराशा, अवसाद आदि दुःख अन्य देशों की स्पर्धा में हमें कहीं अधिक दिखाई देते हैं। इस से स्पष्ट होता है कि संपन्न लोगों में निराशा, विषाद, दुःख, क्लेश, चिंता, अवसाद आदि सब कष्ट साधारण लोगों से कहीं अधिक होते हैं। यह निराशा किसी एक व्यक्ति या किसी एक देश तक ही सीमित नहीं है अपितु विश्व के प्रायः सब देशों के युवक इस रोग से ग्रसित हैं, इस में भारत भी सम्मिलित है।

अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति जोनसन ने अपने व्याख्यान में एक बार इस प्रकार कहा था– हमारा कल (भविष्य) पर विश्वास नहीं और वस्तुतः हमें अपने आप पर भी विश्वास नहीं। इससे स्पष्ट दिखाई देता है कि हमें अपने कल पर अर्थात् हमें अपने भविष्य पर किसी प्रकार का विश्वास ही नहीं है। बस हम अपने कल के निर्माण के लिए अपना आज ही नष्ट करने पर तुले हुए है और यह हमारा कल ही हमारी निराशा का कारण बन गया है। जब तक हम आज की चिंता नहीं करते, आज में विचरण नहीं करते, तब हम प्रसन्न नहीं।

अमरीका और वर्तमान युग **(Virtual despair and the modern Age)** शीर्षक के अंतर्गत लिखा। उनका यह लेख भारत के एक समाचार पत्र, जिसका नाम है दैनिक इण्डियन एक्सप्रेस तथा यह नई दिल्ली से प्रतिदिन प्रकाशित होता है। यह लेख इस पत्रिका के ११ अगस्त १९६४ के अंक में प्रकाशित हुआ। इस लेख में आप लिखते हैं कि :

हमारी गलियों में हिंसा है, हमारे बड़े से बड़े कार्यालय और पदों में भ्रष्टाचार है, हमारे युवकों में निरूद्देश्यता है और वृद्ध लोगों में चिन्तातुरता है।

यह शब्द अमरीका के राष्ट्रपति के लिए सन् १९६४ ई. के प्रत्याशी न कहे। बहुत से लोगों में, जो भौतिक सफलता के परे जीवन के आतंरिक तात्पर्य पद दृष्टिपात करते हैं अप्रत्यक्ष निराशा है। उनके इस व्याख्यान से यह बात निकल कर हमारे सामने आती है कि निराशा की इस समस्या ने अमरीका जैसे अत्यधिक समृद्धिशाली तथा अपनी सभ्यता पर अभिमान करने वाले देश में भी इस समस्या ने कितना उग्र रूप धारण कर लिया है। केवल यह रूप धारण ही नहीं किया बल्कि किस प्रकार विचारक नेताओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है और कर रही है। डॉ० अलेक्सिस केरल नामक एक विचारक स्वीडन में निवास करते थे। इन्होंने ''अज्ञात मानव'' **(Man The Unknown)** नामक पुस्तक में मानव के इस अवसाद तथा विषाद की अवस्था का चित्र खींचते हुए इस प्रकार लिखा है– हम अप्रसन्न हैं। नैतिक और मानसिक रूप में हमारी अवनति हो रही हैइत्यादि। हम इन उदाहरणों के माध्यम से यह देखा रहे हैं कि विश्व के अत्यधिक ही नहीं सर्वाधिक समृद्धिशाली देश की अवस्था इस प्रकार की हो चुकी है तो भारत जैसे निर्धन देश के युवकों की ही नहीं यहाँ के देशवासियों की क्या अवस्था होगी, इस सम्बन्ध में तो कुछ कहने के लिए बचता ही नही।

भारत में इन दिनों अमरीका के एक सुप्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डन (जिन्हें नोबल पुस्कार भी प्राप्त हो चुका है), की अनेक पुस्तकें बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं। इन पुस्तकों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए उनकी इन पुस्तकों का भारत की प्रायः सम्भाषाओं में अनुवाद हो कर प्रकाशन हो चुका है। विषाद की समस्या के समाधान के लिए एक पुस्तक लिखी है–

निश्चितन्ता– इस पुस्तक के कुछ अंश वेदानुकूल होने के आरण हम यहाँ देना आवश्यक समझते हैं। अतः उसके कुछ अंश हम यहाँ देना चाहेंगे।

स्वेट मार्डन उपहास प्रिय थे तथा उपहासात्मक शब्दों के प्रयोग में उन्हें बहुत आनंद आता था। अपने इस स्वभाव के कारण ही विशव के इस रोग के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक के द्वितीय अध्याय में अमेरिकनिटिस की चिकित्सा के सम्बन्ध में लिखते हुए प्रिंस वोल्कोसकी के अमेरिका यात्रा का वर्णन करते हुए अमेरिका के इस रोग में ग्रसित होने का कारण ही का वर्णन करते हुए इस प्रकार लिखते हैं–

कोई प्रसन्नता नहीं, कोई आह्लाद व आनंद नहीं, कोई संतोष नहीं। कोई मानदंड नहीं, सिवाय आर्थिक लाभ के। उनकी लिखी इन पंक्तियों के आलोक में हम कह सकते हैं कि वहां के लोग हंसी, खुशी आनंद के स्थान पर धन को अधिक महत्व देते हैं और किसी भी ढंग से धन कमाने में लगे रहते हैं, धन पाने में लगे रहते हैं। अपने इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए वह बोस्टन निवासी एक व्यापारी के इन शब्दों को उधृत करते हैं, जिसने अपने व्याख्यान में कहा था कि: दिन भर मुझे धन कमाने की हीनता रहती है और सारी रात मुझे यह चिंता सताती है कि जो कुछ मैंने कमाया है, वह हीं नष्ट न हो जाए।

इन सब लेखों से एक बात स्पष्ट होती है कि अमेरिका में धन वैभव को ही आराम का, खुशी का साधन मानते हैं। इसे साधन पाने में दिन रात एक कर देते हैं किन्तु अतुलित धन के स्वामी होने पर भी लोग सुखी नहीं हैं, खुश नहीं है, प्रसन्न नहीं हैं। इस बस से स्पष्ट है कि केवल धन बल ही सुख का नहीं है।

जिस देश में वेद की गंगा बहा करती थी, जिस देश में दुनिया के विद्यार्थी शिक्षा पाने आते थे, आज उस देश की अवस्था भी कुछ अमेरिका जैसी ही हो रही है। भारत के लोग विशेष रूप से क्यों? क्योंकि भारत के युवक भी आज अमेरिका की और न केवल देख रहे हैं अपितु अमेरिका जैसे देश को प्रस्थान चाहते हैं। यह सब धन के लोभी हो गए हैं। अधिकाधिक धन चाहते हैं, इसके लिए चाहे इन्हें अपनी खुशी को त्यागना पड़े। इस कारण कष्ट, क्लेश बढ़ रहे हैं। जब तक हम संस्कृति को आगे बढ़ाते रहे हम समृद्ध रहे, प्रसन्न रहे और इस सब को हम विश्व में बाँटते भी रहे किन्तु ज्यों ही हमने इस सब से मुख मोड़ा हम कष्टों की ओर बढ़ने लगे। वेद में इन सब समस्याओं का समाधान दिया है किन्तु कहीं भी अह्लाद अथवा आनन्द नाम की वस्तु नहीं है। सब में अधिकाधिक धन कमाने की महत्वाकांक्षा के साथ ही साथ जो खो गया, जो गंवा चुके उसे खोजने की, उसे पुनः प्राप्त करने की लालसा है। इसी उधेड़बुन में ही उनका जीवन समाप्त हो जाता है। वेद की ओर लौटे और वेद में इस विशाद नामक समस्या का समाधान खोजने का यत्न करें। ऋग्वेद के मन्त्र ६.५२.५ में इस समस्या के समाधान पर बड़ा सुन्दर प्राकश डाला है। इस मन्त्र पर चिंतन कर इसे अपनावें तो हमें प्रसन्नता का एक बहुत ही सुन्दर मार्ग मिलेगा। आओ हम इस मन्त्र को समझने का यत्न कर विषाद से मुक्त हों।

विद्वान् लेखकों से निवेदन

आपके स्नेहिल आशीर्वाद से आर्य मित्र को सुन्दर बनाने का प्रयास रहता है यदि आपका चिन्तन लेख अथवा कविता के रूप में वैदिक संस्कार, विचार, प्रकाशनार्थ प्राप्त हो जायें तो हमारा सौभाग्य होगा। सुविधानुसार डाक/ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। प्रतीक्षा रहेगी।

आपका अपना ही सदैव–

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सम्पादक/मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, लखनऊ

सम्पर्क सूत्र– 9837402192, 0522–2286328

राष्ट्रोत्थान का सोपान – गृहस्थधर्म

– ओम प्रकश शास्त्री

ऋषियों ने जिन चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास) का वर्णन किया है, उनमें गृहस्थ आश्रम दूसरा आश्रम है। जैसे ब्रह्मचर्य–आश्रम पच्चीस वर्ष तक निश्चित है, ठीक इसी प्रकार गृहस्थाश्रम का कार्यालय भी पच्चीस वर्ष का होता है। जिस प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम में तप की, स्वाध्याय की, सन्तोष की, संयम की, साधना की, अहिंसा की, सत्य की, अस्तेय की, ब्रह्मचर्य की और अपरिग्रह की आवश्यकता होती है, ठीक उसी तरह उपरोक्त सभी नियमों की गृहस्थाश्रम में गृहस्थी को आवश्यकता होती है। जिस प्रकार उपरोक्त नियमों को जाने और माने बिना ब्रह्मचर्य आश्रम का कोई अस्तित्व नहीं है, ठीक उसी प्रकार उपरोक्त नियमों के बिना हम सद्गृहस्थ की कल्पना नहीं कर सकते। प्रश्न उत्पन्न होता है, कि जब उपरोक्त नियमों पर ही दोनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य और गृहस्थ) का अस्तित्व टिका हुआ है, फिर दोनों (आश्रमों) में अन्तर क्या है? इस प्रश्न का उत्तर तैत्तिरीय उपनिषद् की निम्न पंक्ति से स्पष्टतः प्राप्त हो जाता है, जिसमें लिखा है ''आचार्याय प्रियं धनमाळत्य प्रजान्तुं मा व्यवच्छेत्सीः अर्थात् आचार्य अपने शिष्य (जो पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्यक पूर्वक आचार्य के सपीप रहे।) को उसके समावर्तन–संस्कार के अवसर पर उपदेश देते हुए कहते हैं कि हे शिष्य! प्रजा (सन्तान) उत्पत्ति के क्रम को मत तोड़ना। आचार्य का शिष्य को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने तथा सन्तान उत्पन्न करने का आदेश है। आचार्य की उपदेश– श्रृंखला का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने से न केवल इस प्रश्न का उत्तर है, कि कैसा गृहस्थी बनना है? धर्म का, सत्य का, स्वाध्याय का, संयम का और साधना का पालन करते हुए गृहस्थधर्म को निभाना, इसीलिए आचार्य को कहना पड़ा कि धर्म चर, सत्यं वद और स्वाध्यायान्मा प्रमदः। उसके बाद बाद कहा कि प्रजातन्तुं मा व्यच्छेत्सीः। आचार्य प्रवर के उपरोक्त उपदेश से यह सहजतया समझा जा सकता है कि आचार्य अपने कुल में ब्रह्मचारी को तो बह्मचारी बना ही रहे थे, इसके साथ ही गृहस्थी को भी ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी को भी ब्रह्मचारी और सन्यासी को भी ब्रह्मचारी बना रहे हैं। कैसा गृहस्थी बनना? धर्म का आचरण करने वाला गृहस्थी बनना। कैसा गृहस्थी बनना? स्वाध्यायशील गृहस्थी बनना। ऐसे न केवल गृहस्थी बनना, अपितु वानप्रस्थी और सन्यासी भी इसी प्रकार के बनना। आचार्य द्वारा शिष्य को दिये उपदेश के आनुसार ब्रह्मचर्य आश्रम और गृहस्थाश्रम के मध्य जिस अन्तर को मैंने समझा है, उसके अनुसार गृहस्थ में ब्रह्मचारी को भिक्षाटन नहीं अपितु स्वयं कमाना है। बाकी ब्रह्मचर्य के सभी नियमों को अपनाते हुए गृहस्थी बने ब्रह्मचारी को सन्तान पैदा करनी हो। वो सन्तान, जो समाज में यश कमाने वाली है। वो सन्तान, जो माता–पिता की आज्ञा का पालन करने वाली हो। वो सन्तान, जो धन से, बल से, पद से, कद से सम्पन्न होने के बाद भी अहंकार–रहित व विनयशीलता से युक्त हो। वो सन्तान जिसमें अपने से बड़ों का मान–सम्मान करने के संस्कार कूट–कूटकर भरे हुए हों। एसे गृहस्थी जो अपनी सन्तानों के लिए चरित्र की, सुशीलता की, शिष्टाचार और सदाचार की पाठशाला बने हुए हैं वस्तुतः ऐसे गृहस्थी धन्य हैं, उनका ग्रहस्थाश्रम धन्य है। राष्ट्र, सामाज, की उन्नति के बहुत सारे साधन हैं लेकिन उपरोक्त गुणों से युक्त गृहस्थधर्म भी राष्ट्रोत्थान में महत्वपूर्ण साधन बन सकता है। उपर्युक्त गुणों से युक्त गृहस्थाश्रम राष्ट्र को उन्नति के उच्च शिखर पर ले जा सकता है। चाणक्य ने किस गृहस्थाश्रम को स्वर्ग कहा है? इसका उत्तर उन्होंने स्वयं अपने नीतिग्रन्थ चाणक्य नीति में देते हुए लिखा है कि–

सानन्दं सदनं सुतासतु सुधियः
कान्ताप्रियालापिनी।
इच्छापूर्ति धनं स्वयोषिति रति स्वाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे।
साधोः सगंमुपासते च सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।

अर्थात् जहाँ (गृहस्थाश्रम में) सन्तान बुद्धिमान है, पत्नी प्रिय बोलने वाली है, इच्छापूर्ति करने में समर्थ धन है, अपनी पत्नी से सन्तुष्टि है, अतिथियों की सेवा और भगवान की भक्ति है, आज्ञा का पालन करने वाले सेवक हैं, शुद्ध, पवित्र, पौष्टिक खान–पान है, और साधुओं का, सज्जनों और विद्वानों का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त होता है वस्तुतः ऐसा गृहस्थाश्रम धन्य है, ऐसे ग्रहस्थाश्रम को हम ऐसे गृहस्थ को राष्ट्रोत्थान का सोपान भी कह सकते हैं। मनुस्मृति का हवाला देते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द जी संस्कारविधि के ग्रहाश्रम–प्रकरण में लिखते हैं कि–

यस्मात् त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

अर्थात् जिससे ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और संन्यासी इन तीन आश्रमियों को अन्न, वस्त्रादि दान से नित्यप्रति गृहस्थ धारण, पोषण करता है, इसलिए व्यवहार में ग्रहाश्रम सबसे बड़ा है। हे मनुष्यों! जैसे सब बड़े बड़े नद और नदी सागर में जाकर मिलते या स्थिर होते है, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थ को प्राप्त होके स्थिर होते हैं, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थी को प्राप्त होके स्थिर होते हैं। महर्षि के उपरोक्त मन्तव्य से भी स्पष्ट है कि ग्रहस्थाश्रम राष्ट्र की आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक, राजनीतिक और चारित्रिक उन्नति की अहम् कड़ी हैं। मुझे यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि प्रायः पाश्चात्य सभ्यता के शिकंजे में फसे हमारे गृहस्थ जीवन से हमारे शाश्वत जीवन मूल्यों का तेजी से अवमूल्यन होता जा रहा है। पहले हमारे गृहस्थ जीवन के सम्बन्धों में व्यापकता थी लेकिन अब हमारे सम्बन्ध सिमटते जा रहे हैं। पहले गृहस्थ जीवन में ईश्वर भक्ति, पितृभक्ति, राष्ट्रभक्ति थी, परन्तु आज यदि खत्म नहीं हुई है, तो उनमें अत्यधिक न्यूनता अवश्य आयी है। एक कटु सत्य यह भी है कि हमारा इस तरफ कोई विशेष ध्यान भी नहीं है, यदि समाज के मुख्य घटक कहे जाने वाले गृहस्थ धर्म का गम्भीरता से पालन किया होता, तो हमारा समाज आज जिन चुनौतियों से सूझ रहा है, उन पर विजय प्राप्त कर समाज को नई दिशा व दशा का प्रदान कर रहा होता।

परन्तु बड़े खेद के साथ मुझे लिखना पड़ रहा है कि आज राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के साधन गृहस्थाश्रम केवल विषय–वासना की पूर्ति के केन्द्र बनकर रह गये हैं। जिस गृहस्थाश्रम आज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है। जो गृहस्थाश्रम कभी शान्ति के स्रोत व सद्भाव के केन्द्र माने जाते थे, आज वे अशान्ति के स्रोत व सद्भाव के केन्द्र माने जाते थे, आज वे अशान्ति और आन्तरिक कलह के स्थल बनते जा रहे हैं। पाठकगण कह सकते हैं कि क्या सभी गृहस्थ इस विडम्बना के शिकार हैं? उत्तर में मेरा यही निवेदन है कि सभी गृहस्थियों की तो ऐसी अवस्था नहीं है लेकिन अधिकांशतः उपरोक्त समस्याओं से प्रभावित हैं। राष्ट्र को नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से मजबूत बनाना चाहते हैं, तो हमें अपने पूर्वजों के उसी मार्ग का अनुसारण करना पड़ेगा जिसे उन्होंने अपने गृहस्थ जीवन में अपनाया था। मर्यादा में रहकर ही वे गृहस्थ धर्म से खुद को और समाज को सुख–शान्ति का सन्देश दे पाये थे फिर वे चाहे ही राम हों, श्री कृष्ण हो, राजा जनक हों, महर्षि याज्ञवल्क्य हो, उद्दालक हों। हमारे देश में ऐसे अनेक सद्गृहस्थी हुए हैं जिन्होंने राष्ट्रोत्थान के इस सोपान को तथाकथित आधुनिकता के शिकञ्जे में फंसने से बचाएँ और गृहस्थधर्म को राष्ट्र धर्म से जोड़ने का प्रयास करें, ताकि हमारा राष्ट्र, हमारा समाज अपने प्राचीन गौरव व उत्थान को प्राप्त कर सके।

अनिवार्य शुभ सूचना

प्रदेश एवं देश की समस्त आर्य समाजों एवं जिला सभाओं तथा प्रतिनिधि सभाओं के आर्य श्रेष्ठी, आर्य कार्यकर्त्ताओं को जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने निर्णय लिया है कि जो आर्य सन्यासी तथा विद्वान् उपदेशक वृद्ध होने पर रुग्ण होने पर असहाय स्थिति में रहते हैं उसके लिए ''आर्यविद्वत्सहायता निधि'' की स्थापना की गई है जो न्यूनतम २ करोड़ रुपये की होगी इसके ब्याज से प्रतिमास पेंशन रूप में सहायता दी जायेगी उसका पृथक् से खाता भी खोल दिया गया है। आप सभी से सनुरोध प्रार्थना है कि प्रत्येक आर्यसमाज/जिला सभा, प्रतिनिधि सभायें अपने स्तर से अथवा व्यक्तिगत रूप से निधि की राशि पूर्ति हेतु अभियान चलाकर पुण्य के भागी बनेगें ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। आप द्वारा दिया गया सहयोग, वेदप्रचार एवं विद्वत्सम्मान में नींव का पत्थर बनेगा। पुण्य के भागी बनकर हमारा मनोबल बढ़ायेगें तथा अन्यों को भी प्रेरणा प्रदान करेंगे।

डॉ० धीरज सिंह आर्य — सभा प्रधान
अरविन्द आर्य — सभा कोषाध्यक्ष
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री, मो० : ९८३७४०२१९२

श्राद्ध से ही नहीं, जीवित वृद्धजनों की उचित देखभाल से उससे भी ज्यादा प्रसन्नता मिलती है

– सीताराम गुप्ता
फोन : ०९५५५६२२३२३

श्राद्ध शब्द का उच्चारण करते ही मन में जो चित्र बनता है वह है ज़मीन पर बिछी हुई पट्टी पर पंक्ति में बैठे हुए कुछ लोगों का भोजन करना व कुछ का उन्हें श्रद्धापूर्वक भोजन करवाना। कुछ लोग श्रद्धा से नहीं मजबूरी में भी ये अनुष्ठान सम्पन्न करवाते मिल जाएंगे। आज तो इसका पूरा अर्थशास्त्र ही विकसित हो चुका है। कहते है कि श्राद्ध, तर्पण अथवा पिंडदान से पूर्वजों की आत्मा की तृप्ति होती है। उन्हें मोक्ष मिलता है। इससे प्रसन्न होकर वो आशीर्वाद देते हैं जिससे घर में समृद्धि आती है। प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच श्राद्ध, तर्पण अथवा पिंडदान से मृतकों को तृप्ति मिलती है? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए श्राद्ध के वास्तविक अर्थ को समझना ज़रूरी है? श्रद्धा के वशीभूत होकर जो कार्य किया जाए वही वास्तव में श्राद्ध होना चाहिए लेकिन आजकल ये शब्द अपने दिवंगत पूर्वजों की स्मृति में किए जाने वाले कर्मकाण्ड के लिए रूढ़ हो गया है।

श्राद्ध अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, सम्मान अथवा आभार प्रकट करने का एक तरीका है। निस्संदेह हमें उनका आभारी, उनका कृतज्ञ होना चाहिए। लेकिन क्या मात्र पितृपक्ष का अनुष्ठान उनके प्रति वास्तविक श्रद्धा व्यक्त करने में सक्षम हो सकता है? क्या पिंडदान करने अथवा किसी को भोजन करा देने से किसी दिवंगत की आत्मा वास्तव में मुक्त, तृप्त या प्रसन्न हो सकती है? किसी को भोजन करा देने से भोजन करने वाले व भोजन कराने वाले का मन अवश्य प्रसन्न हो सकता है लेकिन किसी दिवंगत की आत्मा भी इससे तृप्त हो जाए इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। फिर इसका प्रारम्भ कैसे हुआ?

मनुष्य जन्म श्रेष्ठ तथा देवताओं के लिए भी दुर्लभ माना गया है। आज मनुष्य सभ्य हो गया है। सभ्य मनुष्य होने के नाते उसके लिए अनेकानेक कर्म निर्धारित व निश्चित किए गए हैं। मनुष्य की इस विकास–यात्रा में न जाने कितने लोगों का योगदान रहा है। अपने निकट संबंधियों व माता–पिता का योगदान तो अपरिमित ही रहता है। उसे अपने विकास के लिए दूसरों के योगदान का भी अहसास है अतः कृतज्ञता व्यक्त करना स्वाभाविक है। अब यह कृतज्ञता, सम्मान अथवा श्रद्धा कैसे व्यक्त की जाए? जिसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी है उसको स्मृति में लाकर उसका व्यक्त किया जाए, उसको प्रमाण किया जाय अथवा उसकी याद में कोई अच्छा, यादगार कार्य किया जाए अथवा किसी को भोजन कराया जाए?

इस प्रक्रिया में जिसको जो अच्छा लगा वह वही करने लगा और इस प्रकार से बहुत सारे तरीक़े लोगों ने निकाल लिए। किसी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में किसी को भोजन कराया तो किसी ने उनके नाम पर कुएँ खुदवाए, धर्मशालाएँ बनवाईं, चिकित्सालय अथवा स्कूल–कॉलेज खुलवाए। एक ने जो किया दूसरों ने भी उसकी नकल की। कुछ तरीक़े ज्यादा प्रसिद्ध व प्रचलित हो गए क्योंकि उन्हें करना आसान था। उन्हीं में एक है पूर्वजों की स्मृति में भोजन कराना। एक ने कराया तो दूसरों ने भी वही किया। कुछ खिलाने वाले थे तो कुछ खाने वाले भी पैदा हो गए। कुछ अकर्मण्य लोगों की उदरपूर्ति से जुड़ गई ये परंपरा। उन्हें इसके स्थायीकरण में लाभ लगा। परंपराएँ रूढ़ियाँ बनती चली गईं। उसके पीछे के उद्देश्य को लोग भूलते चले गए।

कोई भी परम्परा कितनी भी आडबरपूर्ण क्यों न हो उसके कुछ सकारात्मक पहलू जरूर होते हैं। श्राद्ध पर भी यह तथ्य लागू होता है। जैसा कि श्राद्ध का मुख्य प्रयोजन श्रद्धा प्रकट करना ही है अतः जब भी हम किसी के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं तो हमारी मनोदशा परिवर्तित हो जाती है। हमारे अंदर सबके लिए ही कृतज्ञता का भाव उत्पन्न होने लगता है। जिससे हमारा जीवन भर का रिश्ता रहा है यदि हम उसको एकदम से भुला देते हैं तो यह हमारे लिए अच्छा नहीं। इसका यही अर्थ है कि हम बेहद स्वार्थी हैं। कृतज्ञता के अभाव में मनुष्ता ही नष्ट हो जाती है। श्रद्धा अथवा कृतज्ञता के विकास के साथ हममें अहंकार का लोप होता है और प्रेम का प्रकटीकरण। जो दिवंगत को प्रेम कर सकता है वह सबसे प्रेम कर सकता है। मनुष्यों से ही नहीं प्रकृति से भी।

ये अवस्था मनुष्य के लिए बहुत लाभदायक होती है। इस प्रकार से पूर्वजों के प्रति श्रद्धा से हम अपने श्रद्धाभाव का विकास कर पाने में सक्षम हो जाते हैं जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। जब भी कोई व्यक्ति अपने माता–पिता, दादा–दादी अथवा अन्य दिवंगत पूर्वजों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है अथवा उनका श्राद्ध करता है तो उस परिवार में अगली पीढ़ियों के लोग भी उससे बहुत कुछ सीखते हैं। श्रद्धा के भाव उनमें अपने आप संक्रमित हो जाते हैं। यदि कोई अपने बुजुर्गों की सेवा करता है अथवा उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है तो उसके बच्चे भी स्वाभाविक रूप से आज्ञाकारी बनते हैं और माता–पिता के प्रति सेवाभाव रखते हैं। बड़ी उम्र में उनकी सेवा करते हैं। सबसे बड़ी बात ये है कि ये प्रक्रिया संबंधों में कृत्रिमता आने से रोकती है।

श्राद्ध में दान का तत्त्व भी बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। किसी को भोजन करवाना या अन्य प्रकार से दान देना बुरी बात नहीं। दान देने से देनेवाले को संतुष्टि का आभास होता है। जीवन में संतुष्टि का अभाव अनेक समस्याओं को उत्पन्न करता है। संतुष्ट व्यक्ति इन सभी समस्याओं से बच जाता है। एक संतुष्ट व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ भी रहता है। वह समस्याओं का मुकाबला करने में सक्षम होता है। इससे लोगों की मदद करने का जज़्बा भी पैदा होता है जो एक बहुत अच्छी आदत है। इससे समाज में सौहार्द की वृद्धि होती है। श्राद्ध से परिवार में जो समृद्धि आने की बात कही गई है वो वास्तव में श्राद्ध के दौरान व्यक्ति में उदात्त भावों के उत्पन्न होने के कारण उसके सकारात्मक प्रभाव के लाभ की बात ही है।

श्राद्ध अथवा स्मृतिस्वरूप जब कोई व्यक्ति समाजोपयोगी कार्य करता है तो उससे पूरा समाज लाभांवित होता है। यदि कोई अपने पूर्वजों की स्मृति में विद्यालय अथवा अन्य कोई संस्था खुलवाता है तो समाज को बेतहाशा लाभ मिलता है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से लोगों में जागृति उत्पन्न होती है। समाज उन्नति की ओर अग्रसर होता है। अस्पताल खुलवाने से लोगों को रोगों से मुक्ति मिलती है। अन्य कार्यों से भी समाज में अपेक्षित इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण होता है जो लोगों के विकास में सहायक होता है। इससे करने वाले को निस्संदेह प्रसन्नता से बढ़कर और क्या सुख हो सकता है।

हम सब अपने पूर्वजों की स्मृति बनाए रखना चाहते हैं। यह कोई बुरी बात नहीं । हम पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्राद्ध करें या फिर उनकी स्मति बनाए रखने के लिए उनके नाम पर कुएँ खुदवाना, धर्मशालाएँ बनवाना, चिकित्सालय अथवा स्कूल–कॉलेज खुलवाएँ अच्छी बात है। यह कार्य परोक्ष रूप से समाज सेवा से जुड़ता है। आज अधिकांश मेमोरियल चिकित्सालय अथवा स्कूल–कॉलेज कमाई के अड्डे बने हुए हैं। समाज सेवा का उनसे दूर–दूर तक कोई रिश्ता नहीं। इससे बचना अनिवार्य है। आज श्राद्ध एक विवशता, एक मजबूरी बन गया है। कहीं–कहीं इसका स्वरूप अत्यंत विकृत हो चला है। कहीं ब्राह्मण यजमान का शोषण कर रहा है तो कहीं यजमान ब्राह्मण को बेवकूफ बना रहा है।

समय–समय पर समाज के प्रबुद्ध जनों ने समाज के विकास के लिए जिन अच्छी चीजों को परंपरा का हिस्सा बना दिया था यदि आज वो परंपराएँ प्रासांगिक नहीं रहीं तो उनमें परिवर्तन की आवश्यकता है। हम अपने पूर्वजों का श्राद्ध पारंपरिक रूप में करें या न करें लेकिन जीते जी उन्हें किसी प्रकार की कमी न होने दें आज ये बहुत ज़रूरी है। हम देखते हैं कि मरने के बाद तो लोग बड़ी धूम–धाम से सब कुछ करते हैं लेकिन जीते जी पूरी तरह से बुजुर्गों की उपेक्षा करते हैं। कुछ लोग जीते जी स्वयं अपना श्राद्ध कर लेते हैं। इससे उन्हें प्रसन्नता मिलती है। वास्तव में ये वो लोग होते हैं या तो जिनका श्राद्ध करने वाला कोई होता नहीं या फिर जिनके जीवन में प्रसन्नता का अभाव होता है।

श्राद्ध कहीं न कहीं व्यक्ति की संतुष्टि से ही जुड़ता है। इसलिए ज़रूरी है कि घर के बड़े–बुजुर्गों का पूरा ध्यान रखा जाए। उनकी हर बात को समझकर महत्त्व दिया जाए। उनकी पसंद–नापसंद का विशेष ध्यान रखना और हर हाल में उनका अकेलापन दूर करने का प्रयास करना अनिवार्य हो जाता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में यथासंभव उनकी हर इच्छा को पूर्ण करने का प्रयास करें। यदि हम अपने माता–पिता अथवा अन्य बुजुर्गों को उनके अंतिम समय में सुखी–संतुष्ट जीवन व्यतीत करने का असास करवा सकें तो ये सबसे बड़ा श्राद्ध होगा। इससे उन्हें ही नहीं हमें भी वही खुशी मिलेगी जो पारंपरिक रूप से श्राद्ध करने से मिलती हैं।

वेद प्रचार मण्डल मुरादाबाद

१०, ११, १२ सितम्बर, को गुलजारीमल की धर्मशाला में वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। स्वामी विदेहयोगी जी एवं श्री पं० योगेशदत्त जी आर्य के उपदेश एवं भजन सत्संग का कार्यक्रम हुआ। समापन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के उपप्रधान श्री ज्ञानेन्द्र गाँधी जी का भव्य स्वागत किया गया कार्यक्रम का संयोजन ऋषिपाल शास्त्री ने किया *कार्यक्रम में मयंक आर्य, विनोद आर्य,* डॉ० ओमप्रकाश जी एवं मण्डल के समस्त अधिकारियों ने सहयोग प्रदान किया।

2. आर्य समाज स्याना बुलन्द शहर का वार्षिक सम्मेलन ६,१०, ११ सितम्बर २०१७ को उत्साह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ रहे वेदपाठ गुरूकुल के छात्रों ने किया श्री हरिशंकर अग्निहोत्री, स्वामी अखिलानन्द जी, आ० प्रमोद जी, आ० शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती सीता आर्या, पं० कुलदीप आर्य बिजनौर, ब्र० दयानन्द आर्य, अ० दिनेश शास्त्री आदि–आदि विद्वानों के विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई श्री नरेन्द्र आर्य प्रधान, सुरेन्द्र आर्य, भागीरथ आर्य, सन्दीप आर्य विनय आर्य, विभूति आर्य, माता सुदेश आर्या, निर्मला आर्या, माता कुमुदिनी आर्या आदि–आदि का सहयोग रहा नगर एवं आस–पास के ग्रामों के आर्यों ने विचार सुनकर लाभ उठाया।

3. आर्य समाज आलमनगर में ३१ अगस्त को एक दिन का वेद प्रचार कार्यक्रम किया गया स्वामी अखिलानन्द जी, आ० दिनेश जी ने ने यज्ञ सम्पन्न कराया सभा मन्त्री स्वामी जी का आशीर्वाद हुआ आयुष्मान नामकरण किया गया। देवेन्द्र सिंह आर्य, वीर सिंह आर्य, मु० अमर सिंह आर्य, सुरेन्द्र सिंह आर्य, लहरड़ा आदि–आदि का विशेष सहयोग रहा।

4. आत्म शुद्धि आश्रम– बहादुरगढ़ में १ सितम्बर से चतुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ हुआ इसकी पूर्णाहुत २ अक्टूबर को होगी। सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने यज्ञ के पश्चात् उपदेश दिया यज्ञ ब्रह्मा स्वामी योगी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती हैं स्वामी धर्ममुनि जी का सानिध्य पाया है।

5. जिला आर्य महा सम्मेलन सहारन पुर– ८, ६ सितम्बर २०१७ को आर्य समाज जनक नगर के पास उत्सव पैलेस में जिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ पूरे नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व सभा प्रधान श्री डॉ० धीरज सिंह जी ने किया तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द की विश्व को देन विषय पर गोष्ठी हुई विद्वानों के भाषण हुए सभा मन्त्री स्वामी जी एवं सभा प्रधान जी ने भी सम्बोधन दिया, रात्रि में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा रविवार को वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कार्यकर्ता सम्मान सम्मेलन सम्पन्न हुए। श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी जिला प्रधान श्री अवनीश आर्य जिला मन्त्री के साथ जिले की सभी समाजों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर जागृति पैदा की। सभी भजनों पदेशक एवं सभी विद्वान् सभी आर्य कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद करते हैं सभा की ओर से सभी का अभिनन्दन है।

6. गुरूकुल पटेल मार्ग गाज़ियाबाद अचार्य दिनेश कुमार शुक्ल–प्रचार्य का हार्दिक अभिनन्दन– ५ सितम्बर शिक्षक दिवस के अवसर पर आ० दिनेश जी को राष्ट्रीय पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदान किया गया इस अवसर पर गा० बाद जोन पर सभा की ओर से सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में आचार्य जी का हार्दिक अभिन्नद किया गया जिसमें तेज पाल आर्य प्रबन्धक गु० पूठ के प्राचार्य राजीव जी, अखिलानन्द जी दिनेश जी, गु० ततारपुर से आ० प्रेम पाल शास्त्री, आ० रणजीत सिंह, गढ़ से मनमोहन शास्त्री, दादरी से प्राचार्य रतन सिंह, गाजिया बाद की आर्य संस्थाओं से अधिकारियों ने फूल मालाओं से भारी स्वागत किया। हार्दिक बधाई।

पूर्व सभा मन्त्री श्री सच्चिानन्द जी गुप्त लखनऊ की श्रद्धांजली सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० क कार्यालय में भी पूरे प्रदेश की ओर से श्रद्धाञ्जली सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम यज्ञशाला में शान्ति यज्ञ श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ तत्पश्चात् सभी प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सभा प्रारम्भ हुई संयोजन सभा मन्त्री स्वामी जी ने किया। सर्व प्रथम परिचय देते हुए स्वामी जी ने बताया कि गुप्त जी बड़े उदारमना एवं धर्म पालक, राष्ट्र हितैषी, विधायक एवं मन्त्री उ०प्र० सरकार में रहकर चौ० चरण सिंह जी के नेतृत्व में किसानों की लड़ाई लड़ते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के वे ६ वर्ष तक महामन्त्री पद पर रहे फिर गुरूकुल वृन्दावन के कुलपति पद पर भी रहे आप सदैव प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी के दयाँ हाथ बनकर कार्य करते रहे। आपका भाषण ओजस्वी एवं गम्भीर होता था। आर्य समाज के वार्षिक सम्मेलन में आप उत्साह पूर्वक जाते थे लोगों की समस्याओं का समाधान भी सहज रूप में करने की आदत थी आप आर्य समाज मन्दिर सदर लखनऊ से सदैव जुड़े रहे। वहाँ आपकी प्रतिष्ठा थी बिना पद के कार्य करने की प्रवृत्ति सदैव रही।

महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही का अभाव लम्बे समय तक याद किया जायेगा। इसके पश्चात् श्री वीरेन्द्र रत्नम् जी ने मृत्युमीमांसा पर प्रवचन दिया और गुप्त जी की प्रशंसा की इसी क्रम में श्री जयप्रकाश भारती गाजीपुर, श्री रामशंकर आर्य जौनपुर, श्री बलराम यादव जी, श्री डा० विवेक आर्य वाराणसी, श्री अजय श्रीवास्तव लखनऊ, सभा उपप्रधान, श्री मनमोहन तिवारी लखनऊ, उपमन्त्री आर्य समाज सदर लखनऊ, सन्तोष मिश्रा श्री प्रकाश नारायण शास्त्री वाराणसी, श्री प्रताप सिंह, मुकेश आर्य मु० नगर, श्री कृष्ण मुरारी जी कार्यालयाधीक्षक के अलावा उनकी पुत्री ने भी श्रद्धाञ्जली अर्पित की इस अवसर पर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आर्य महानुभाव उपस्थित रहे अन्त में अध्यक्ष श्री डा० धीरज सिंह जी ने उनके जीवन की कई घटनायें सुनाकर भाव विभोर कर दिया और उन्हें आर्य समाज का सच्चा सैनिक तथा हितैषी बनाया। प्रदेश की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धाञ्ली।

महर्षि दयानन्द ला० रामगोपाल आर्य शोध संस्थान-बुलन्द शहर में प्रेरणा दिवस

आर्य समाज बुलन्द शहर के प्रधान संजीव रामा के पिता श्री रामगोपाल आर्य की स्मृति में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने सम्पन्न कराया। मुम्बई से पधारे आ० वागीश जी वैदिक विद्वान का प्रभावशाली उद्बोधन हुआ। यजमान सुनील रामा एवं राजीव रामा रहे।

कार्यक्रम में पूर्वमन्त्री वीरेन्द्र सिरोही, विधायक देवेन्द्र लोधी के अलावा अनिता भारद्वाज, अनिल आर्य, अनुराग शास्त्री स्वामी अखिला नन्द जी, प्रदीप शास्त्री सहित सैकड़ो आर्य उपस्थित रहे। सन्तोष राघव, बाद में सुनील रामा जी ने सभी को धन्यवाद दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान शिवकुमार मदान जी की स्वर्ण जयन्ती

८ सितम्बर को आर्य सामज जनकपुरी ८३ के प्रधान श्री मदान जी के विवाह की स्वर्ण जयन्ती स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई मुख्य वक्ता श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मन्त्री के साथ श्री डॉ० महेश विद्यालंकार सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेश अग्रवाल, दिल्ली सभा अध्यक्ष धर्मपाल आर्य ने भी विचार प्रस्तुत किये, संयोजन प्रणवदेव शास्त्री धर्माचार्य ने किया आर्य जनता ने शुभकामनायें प्रदान की।

आर्य समाज अजमेर में वेद प्रचार सप्ताह एवं सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर में वेद प्रचार सप्ताह तथा सामवेद पारायण यज्ञ दिनांक ७ सितम्बर २०१७ से १० सितम्बर २०१७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्वान डॉ० विष्णु मित्र वेदार्थी (बिजनौर), सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव जी बेधड़क, तथा यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० सूर्यादेवी चतुर्वेदी, प्राचार्या कन्या गुरूकुल शिवगंज सिरोही (राज०), आर्य समाज भवन में प्रातःकाल व सायंकाल भजन, प्रवचन, सामवेद पारायण तथा विभन्न आर्य विद्यालयों में प्रचार कार्य सम्मपन्न हुआ। हजारों धर्म प्रेमियों ने धर्म लाभ उठाया। अन्तिम दिवस ऋषि लंगर (भण्डारा) सहभोज का आयोजन हुआ।

निर्वाचन

आर्य समाज नकुड़ (सहारनपुर)

१. प्रधान– **श्री अभय सिंह सैनी एडवोकेट।**

२. मन्त्री– **भूपेन्द्र कुमार आर्य।**

३. कोषाध्यक्ष– **डॉ0 शिवकुमार।**

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मी लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४ -३७' ०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup8

सेवा में,
.....
.....

सच्चिदानन्द जी गुप्त की श्रद्धांजलि सभा की झलकियाँ

सहारनपुर वेद प्रचार सम्मेलन की झलकियाँ

वेदप्रचार मण्डल मुरादाबाद, वेद प्रचार महोत्सव की झलकियाँ

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।